समाचार प्रकाशनार्थ

संसदीय मर्यादाओं को कायम रखने के आह्वान के साथ पीठासीन अधिकारियों का 74 वां सम्मेलन सम्पन्न

भोपाल : चार फरवरी, 2010

पीठासीन अधिकारियों का 74 वां सम्मेलन आज यहां सम्पन्न हो गया। गत 3 फरवरी को इस सम्मेलन का उद्घाटन लोकसभा स्पीकर श्रीमती मीरा कुमार ने किया था।

सम्मेलन में 2 दिन तक संसदीय रूचि के तीन विषयों पर विचार-विमर्श हुआ। जिनमें प्रासंगिकता बढ़ाने के लिये विधायिक द्वारा स्व-आकलन, छोटे राज्यों का निर्माण-एक राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य तथा विधायिका के प्रशासन में स्पीकर की भूमिका विषय शामिल है।

सम्मेलन में 3 फरवरी को प्रासंगिकता बढ़ाने के लिये विधायिका द्वारा स्व-आकलन विषय पर चर्चा में 16 पीठासीन अधिकारियों ने भाग लिया। इसके विषय पर चर्चा में 17 पीठासीन अधिकारियों ने चर्चा की।

सभी वक्ताओं का यह एक मत था कि देश की एकता और अखण्डता से बढ़ कर कुछ भी नही है। सभी ने एक राय से यह बात जोर देकर कही कि और अधिक राज्यों के निर्माण की मांग से देश का संघीय ढांचा ही कमजोर हो जायेगा। वर्तमान परिदृश्य में यह विचार सामने आया कि इस विषय पर राष्ट्रीय स्तर पर खुली बहस होनी चाहिये जिसमें सभी दल भाग लें।

अंतिम विषय पर चर्चा में 12 पीठासीन अधिकारियों ने भाग लिया। इसके मोटे रूप से यह सर्वसम्मपति उभर कर आई कि विधानसभा और इसके सचिवालय के प्रशासन में स्पीकर महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। सदन के पीठासीन अधिकारी की हैसियत से उसे संविधान के प्रावधान तथा नियम-प्रक्रिया का पालन कराना होता है। इसके साथ ही उसे सरकार ओर विपक्ष के बीच मध्यस्थ की भूमिका भी निभानी होती है। सचिवालय का प्रशासनिक प्रमुख होने के नाते उसे इसकी स्वतंत्रता व निष्पक्षता भी सुनिश्चित करनी होती है। स्पीकर के ऊपर यह महती जिम्मेदारी होती है कि उसे एक ओर तो यह सुनिश्चित करना होता है कि जनप्रतिनिधियों के माध्यम से जनता की अपेक्षाएं पूरी हो और दूसरी ओर उसे ऐसी स्वस्थ परम्पराओं और प्रथाओं को विकसित एवं संरक्षित करना होता है जो संसदीय संस्थाओं की मर्यादाओं को बढ़ाती है।

आज संगोष्ठी

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान पर्यावरण एवं वन्य जीवन संरक्षण की आवश्यकताओं विषय पर आयोजित एक गोष्ठी का आज शुभारम्भ करेंगे। इसमें पीठासीन अधिकारियों के अलावा म.प्र. के सांसद एवं विधायक भी शामिल होंगे।